जून 2025, अंक 6 वर्ष 02

cinemahaul

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

सिनेमा पर लिखी किताबें

अजय कुमार शर्मा, अश्वनी सिंह, इक़बाल रिज़वी, गजेंद्र सिंह भाटी, गीता श्री, जवरीमल्ल पारख, ज़ाहिद ख़ान, दिनेश श्रीनेत, दीपक दुआ, भवतोष पांडे, मनमोहन चड्ढा, यतीन्द्र मिश्र, यूनुस ख़ान, रेखा देशपांडे, विनीत कुमार, विनोद तिवारी, विवेक रंजन सिंह, हितेंद्र पटेल

आवरण: आर वर्क्स

जून 2025

वर्ष 2 अंक 6

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण विषय: फिल्मों पर लिखी किताबें

कवर : रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 5

मेरी पसंद की पुस्तक: मेरी आत्मकथा - किशोर साहू 9

अजय कुमार शर्मा

'हिंदुस्तानी सिनेमा और संगीत'' – अशरफ अजीज/ जवरीमल्ल पारख 19

अश्वनी सिंह

बहुत कठिन है डगर लेखक की 35

इकबाल रिज़वी

उल्लेखनीय और पठनीय चार किताबें 41

गजेंद्र सिंह भाटी

सिनेमा के शिखर- प्रदीप तिवारी 49

गीताश्री

हिन्दी लेखक की नज़र में सिनेमा 57

जवरीमल्ल पारख

भारतीय सिनेमा का एक संदर्भ ग्रंथ 73

ज़ाहिद ख़ान

जवरीमल्ल पारख की किताब ‘भूमंडलीकरण और सिनेमा में समसामयिक यथार्थ’ 77

दिनेश श्रीनेत

ज़रूरी सिनेमाई दस्तावेज है ‘सपनों के आर-पार’- श्रीश चंद्र मिश्र 90

दीपक दुआ

रूपहले परदे के पार 93

भवतोष पाण्डेय

उल्लेखनीय और पठनीय किताबें 100

मनमोहन चड्ढा

उल्लेखनीय और पठनीय पांच किताबें 102

यतीन्द्र मिश्र

‘सिनेमा के बारे में’ 109

यूनुस ख़ान

प्राक्-सिनेमा : अनुवाद के अनुभव 126

रेखा देशपांडे

अब सिनेमा के लिए भी पढ़ना होगा 138

विनीत कुमार

प्राक्-सिनेमा का पाठ 146

विनोद तिवारी

यतीन्द्र मिश्र से विवेक रंजन सिंह की बातचीत... 150

उल्लेखनीय और पठनीय किताबें 161

संजीव श्रीवास्तव

हिंदी में सिनेमा पर लिखी जा रही किताबें 167

हितेंद्र पटेल

राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किताबें 175

हिंदी में छपी सिनेमा संबंधी किताबें 180

बीते ढाई दशक में हिंदी सिनेमा पर किताबों का सफ़र 195

ज़ाहिद ख़ान

नॉटनल से प्रकाशित किताबें 211

मेरी बात

जून अंक की योजना बनाते समय आवरण विषय के तौर पर सिनेमा संबंधित लेखन का विचार आया। विचार रहा कि सिनेमा पर लिखी जा रही किताबों का आकलन, विवेचन और विश्लेषण किया जाए। इसी उद्देश्य कुछ मित्रों और परिचितों को फोन किया तो आरंभिक प्रतिक्रियाओं में रुचि और उत्साह की कमी दिखी। इसका ऐसा असर हुआ कि कुछ दिनों के लिए मैं थम गया। फिर कुछ भरोसेमंद और हमेशा सहयोग के लिए तत्पर मित्रों की सलाह से योजना पर अमल हुआ। आरंभिक शिथिलता के बावजूद अंक क्लोज करते समय इतनी सामग्री आ गई कि संतोष हुआ। हमेशा की तरह इस अंक में कुछ नए लेखक जुड़े हैं। नए से मेरा तात्पर्य सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन के लिए लिखने से है। नियमित लेखकों के साथ इन नए लेखकों के सहयोग और योगदान से यह अंक समृद्ध हुआ है। कुछ अत्यंत रोचक सामग्रियां इस अंक में प्रकाशित हो रही हैं।

हमारी कोशिश थी कि कुछ किताबों की समीक्षाएं लिखीं जाएं। किताबों की समीक्षा लिखना श्रमसाध्य कार्य है। हमने आसान रास्ता चुना। लेखकों को छूट दी कि वे पहले से लिखी समीक्षा भेज सकते हैं। नतीजा यह हुआ कि अब कई किताबों की समीक्षा एक जगह पढ़ने को मिलेगी। हां, कुछ समीक्षाएं इस अंक के लिए लिखी गयी

हैं। यूनुस खान ने अपनी पुस्तक उम्मीदों के गीतकार की रचना प्रक्रिया के बारे में लिखा है तो रेखा देशपांडे ने 'प्राक फिलोम' के अनुवाद के अनुभव को साझा किया है। इस अंक में यतीन्द्र मिश्र का इंटरव्यू भी है।

हमने सभी से 5 उल्लेखनीय और पठनीय किताबों की संस्तुति मांगी थी। सभी ने तो संस्तुति नहीं भेजी, मगर कुछ लेखकों ने पूरी तल्लीनता से 5 किताबों की सूची तैयार की और उनके बारे में लिखा। कुछ सिर्फ नाम ही दे पाए। उन किताबों के बारे में दो-चार पंक्तियां नहीं लिख पाए। फिर भी संतुष्टि मिली कि पाठकों को दर्जन से अधिक किताबों की अच्छी जानकारी मिल जाएगी।

इस अंक में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किताबों की सूची भी प्रकाशित की जा रही है। भविष्य में हिंदी की पुरस्कृत किताबों पर एक अंक के बारे में सोच रखा है। 1981 से 2022 तक 47 पुस्तकों को सम्मानित किया जा चुका है। इनमें से सबसे अधिक 17 पुरस्कार अंग्रेजी के हिस्से आए हैं। हिंदी में छपी किताबों को केवल 7 पुरस्कार मिले हैं।

फिल्मों पर लिखने की अपनी चुनौतियां हैं। सिनेमा के हिंदी लेखन पर गौर करें तो यह रहस्य और अमूर्त से आरंभ होकर इस कदर सार्वभौमिक और सरल हो गया है कि सोशल मीडिया के युग में हर कोई लेखक बन चुका है। टिप्पणियां तो इतने भाव,

आराम और अधिकार से की जाती हैं कि बाकी सभी मूर्ख हैं और सिर्फ टिप्पणीकार ही ज्ञाता है।

हिंदी में सिनेमा लेखन विकसित नहीं होने के पीछे प्रकाशकों का भी बड़ा हाथ रहा है। मुझे याद है कि जब मैंने किसी प्रकाशक को पुस्तक का प्रस्ताव भेजा तो झट से उनका फोन पर जवाब आया कि 'आप रेखा की जीवनी क्यों नहीं लिखते? हम तुरंत छापेंगे। आपका तो फिल्म इंडस्ट्री में अच्छा परिचय है।' में जीवनियों से बचता रहा हूं। उसमें सच बताने से ज्यादा छुपाने की कोशिश की जाती है। भारतीय सिनेमाई हस्तियों पर छपी आत्मकथाएं और जीवनियां पढ़ने पर आप पाएंगे कि सभी का जीवन एक आवरण में बंद है। विदेशी सिनेमाई हस्तियों की तरह भारतीय हस्तियां खुली और निडर नहीं हैं। वे भय, लाज, गरिमा और कथित शिष्टाचार में कुछ भी बताने से परहेज करती हैं। नतीजा यह होता है कि हम सभी झूठ पढ़ रहे होते हैं। भारतीय सिनेमा सिनेमाई हस्तियों की जीवनी और आत्मकथा एक ऐसी बर्फी है, जिस पर सच के बादाम के छिलके और कतरन छिड़क दिए जाते हैं। सिनेमा संबंधित लेखन का बड़ा हिस्सा संकलन और संपादन है। पत्रकार और शिक्षक समय-समय पर लिखे अपने लेखों का संकलन तैयार कर लेते हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है। अगर वह किसी योजना, व्यवस्था और प्रारूप के साथ किया गया हो। वह एक दस्तावेजीकरण है। अफसोस की बात है कि ऐसा अधिकांश लेखन पंचमेल आस्वाद का होता है।

हमने विभिन्न स्रोतों से हिंदी में लिखी किताबों की एक सूची तैयार की है। 200 से अधिक किताबों की यह सूची फिल्म अध्येताओं और प्रेमियों के लिए उपयोगी है। इस मुख्य सूची के अलावा जाहिद खान की दी गई सूची और नॉटनल से प्रकाशित फ़िल्मी किताबों की सूची भी है। फिल्मों के अध्ययन-अध्यापन से जुड़ी संस्थाएं और विभाग इन विशेष सूचियों का लाभ उठा सकते हैं। यह सूची पूर्ण नहीं है। यह एक आरंभिक प्रयास है। इसमें अभी और किताबें जुड़ेंगी।

यह अंक आप सभी को कैसा लगा? अपनी राय लिखिएगा। मैं नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा को विशेष धन्यवाद देना चाहता हूं कि दोनों मेरी लेट-लतीफी के बावजूद अपनी सक्रियता से नहीं चूकते। लेखकों का तो सतत आभारी हूं।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें फ़िल्में

अजय ब्रह्मात्मज

30 जून 2025

मुंबई

cinemahaul@gmail.com